ॐ

दोहे :– नारी तेरे रुप अनेक

1. देव रचित सुन्दरसृष्टि, विविध रूप समाय।
नारी है उत्तम रचना, सब रूपों में भाय।।

2. सहनशील, ममत्वसागर, जग में माँ कहलाय।
संस्कार का पाठ सिखा, प्रथम गुरू बन जाय।।

3. बेटी, बहू बनकर के, दो कुटूम्ब निभाए।
शिक्षा पाऐ नारी जब, देश शिक्षित हो जाए।।

4. पत्नी रूप में समर्पित, आने न दे खुद में मान।
संकट में हार न माने, जीते सावित्री समान।।

5. रिश्ता कोमल भावों का पर होवे मजबूत।
बहन बन के भाई संग रिश्ता निभावे खूब।।

6. धन, बल, विद्या पाने, दुनिया करत उपाय।
लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती,घर घर पूंजी जाय।।

7. कृष्ण प्रिय तुलसी से, मिट जावे रोग नाम।
वृक्ष स्वरूप मिला हमें, नारी रूप वरदान।।

8. मंहगाई के भार से जब नैया डगमगावे।
खिवैया को थामे पतवार नार बन जावे।।

9. मिले अवसर नार को जब, खेले पुरूष समान।
पा सफलता के शिखर को, बढाए तिरंगा मान।।

10. सुर सीखें लता बनें, उडे सुनीता समान।
राष्ट्रपति बन के पाए, प्रतिभा सा सम्मान।।

11. युद्व वेदी पर गाए , साहस भरे वो गीत।
शत्रु नाको चने चबाए , रण लेती वो जीत।।

12. भारत माँ के रूप में, गरिमा तेरी महान।
अस्तित्व बना रखने को, सब हो जाए कुर्बान।।

By :Mrs. Manisha Gandhi-Kota –Rajasthan